'प्रकृति जो सिखाती है, वह बी-स्कूल नहीं सिखा सकते'

आईआईएम

रांची | प्रमुख संवाददाता

टेडेक्स के आठवें संस्करण में जुटे देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ, अपने कार्यक्षेत्र का अनुभव साझा करते हुए युवाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने के साथ सफलता के सूत्र दिए

बहुदर्शक विकल्पों और अवसरों की खोज, विषय पर विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को सुनना प्रबंधन के विद्यार्थियों और रांचीवासियों के लिए एक अनूठा अनुभव रहा। रविवार को आईआईएम रांची की ओर से टेडेक्स के आठवें संस्करण में कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ख्याति के वक्ता जुटे।

सीएमपीडीआई के मयूरी प्रेक्षागृह में आयोजित टेडेक्स के इस बार की थीम- उत्प्रेरक परिवर्तन, के तहत संभावनाओं का बहुरूपदर्शक विषय पर तमाम वक्ताओं ने अपने कार्यक्षेत्र का अनुभव साझा करते हुए सफलता के सूत्र दिए, साथ ही विकल्पों, अवसरों और संभावनाओं पर चर्चा की। आईआईएम रांची के निदेशक डॉ शैलेन्द्र सिंह ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

पहले वक्ता थे एजुकेशन प्रतिभा के सीईओ सुप्रियो सिन्हा। उन्होंने श्रोताओं को एक कठफोड़वा से प्रेरणा लेने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि कठफोड़वा पक्षी की खासियत यह है कि वह कुछ मिलीमीटर व्यास के एक स्थान को पकड़ता है और जबरदस्त बल और तीव्रता के साथ उस स्थान पर लक्ष्य साधता रहता है। उन्होंने दर्शकों से एक छोटी सी चिड़िया की कल्पना करने के लिए कहा जो कि हजार गुना बल के साथ 20 बार प्रति सेकेंड में चोंच मारती है, जिससे उसके ध्यान और तीव्रता की शक्ति व्यक्त होती है। उन्होंने यह भी कहा कि अफ्रीका के जंगलों में वन्यजीवों के साथ बहुत समय व्यतीत करने के बाद, उन्होंने सीखा है कि कुछ बेहतरीन पाठों को प्रकृति से सीखा जा सकता है, जो कि बी-स्कूलों के प्रबंधन व्याख्यान भी नहीं सिखा सकते हैं।

रविवार को आईआईएम रांची की ओर से आयोजित टेडेक्स कार्यक्रम में अपने विचार रखते वक्ता।

भाग्य भरोसे रहेंगे, तो प्रगति नहीं होगी

अंतरराष्ट्रीय ख्याति के न्यूरो साइंटिस्ट अभिजीत नस्कर ने बताया कि कि कोई भी व्यक्ति मस्तिष्क के बारे में कैसे सोचता है, महसूस करता है और व्यवहार करता है। उन्होंने कहा कि समाज उन व्यक्तियों का एक समूह है, जो अपने तरीके से महसूस करने, सोचने और व्यवहार करने की कोशिश करते हैं, जिससे प्रगति पर अंकुश लगता है। क्योंकि, प्रगति के लिए मूल सोच की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि हम सबको स्वतंत्रता चाहिए, लेकिन मन वास्तव में स्वतंत्रता से नफरत करता है। क्योंकि, स्वतंत्रता अज्ञात का डर लाती है। हम सभी अपने सपनों का पीछा करते हुए किसी के पास होने के लिए तरसते हैं और अगर हम अपने सपनों की खोज में अपने प्रिय जनों की उपेक्षा करते रहते हैं, तो हमारे जीवन का कोई भी उद्देश्य कोई मायने नहीं रखेगा। उन्होंने यह भी कहा कि परिवर्तन के लिए ठोस मानवीय क्रियाओं की आवश्यकता होती है और भाग्य भरोसे रहने से दुनिया की प्रगति नहीं हो सकती।

25 वर्षीय उद्यमी और निवेशक फरहाद एसिडवाला ने सवाल किया कि क्या कभी किसी ने अपने व्यक्तिगत जीवन में डाटा का उपयोग करने के बारे में सोचा था। उन्होंने कहा कि आत्मविश्वास और कौशल हाथोंहाथ आते हैं। आप जितने कुशल होंगे, उतना ही आपमें आत्मविश्वास होगा। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि फीडबैक लेना भी व्यक्तिगत रूप से आपको बाधा देता है। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे एक छात्र उद्यमी के रूप में, कई बार विफल रहे। कहा कि विफलताएं वास्तव में सफलता के लिए एक कदम है।

कोशिश करनेवालों को सराहें

वक्ता राज शमानी संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, वियना में बोलनेवाले सबसे कम उम्र के भारतीयों में से एक हैं। उन्होंने कहा, जब हर कोई समाज में एक प्रभाव पैदा करना चाहता है, तो हम क्या कर सकते हैं? उन्होंने कहा कि यह बहुत सरल है- हम हमारे बगल में बैठे व्यक्ति की सराहना करते हुए, उसे आगे बढ़ाने में योगदान दे सकते हैं। लेकिन होता उलटा है, जब हमारे बीच कोई आगे बढ़ने की कोशिश करता है, तो हम उनका उपहास करते हैं। उन्होंने लोगों को ईमानदार होने के लिए प्रोत्साहित किया। कहा कि जादू आपके ठीक बगल में बैठे व्यक्ति में है। अपने ईर्दगिर्द मौजूद हर व्यक्ति की सराहना शुरू करें, तो वे बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित होंगे।

छोटे शहरों में सपने देखे जाते हैं

आईएएस अधिकारी हर्षिका सिंह ने खुद की कहानी बताकर श्रोताओं को प्रेरित किया कि कैसे एक छोटे शहर की लड़की ने बड़े सपने देखे और उसे साकार किया। उन्होंने बताया कि उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब एक माध्यमिक स्कूल की छात्रा के रूप में वह अपने माता-पिता के साथ एक पुस्तक स्टॉल पर गई और एक पत्रिका के कवर पेज पर आईएएस टॉपर की तस्वीर लगी होने पर मोहित हो गई। उस टॉपर ने उन्हें सिविल सेवा की परीक्षा देने के लिए प्रेरित किया। अपनी पहली यूपीएससी परीक्षा में, उनका ऑल इंडिया रैंक 640 था। उन्होंने दुबारा प्रयास किया और वर्ष 2012 में ऑल इंडिया रैंक आठ हासिल किया। उन्होंने कहा छोटे शहरों में सपने देखे जाते हैं और कामयाबी मिलती है।

सेना के लिए देश सबसे पहले

भारतीय सेना में 35 वर्ष से अधिक सेवा देनेवाले कर्नल प्रबीर सेनगुप्ता इस आयोजन के अंतिम वक्ता थे। उन्होंने सैनिकों के कई संघर्षों के बारे में बताते हुए, अरुणाचल में अपनी पहली स्पीड पोस्टिंग के बारे में बात की, जहां वे अपनी टीम के साथ भारी बारिश में बिना नेटवर्क, बैटरी के साथ थे। उबले हुए पत्तों पर वे जीवित रहे। उन्होंने कहा कि सेना के लिए देश की सुरक्षा, सम्मान और कल्याण सबसे पहले आता है। उन्होंने कहा कि जीवन में जब भी आप एक चौराहे पर आएंगे, जब आपको एक विकल्प चुनना होगा, तो यात्रा की गई सड़क को न चुनें, बल्कि उन रास्तों पर चलें जो उपेक्षित रहे।

खाना पकाने की शैली बदल का स्वस्थ रहें : मास्टरशेफ इंडिया सीजन-1 विजेता पंकज भदौरिया ने पौष्टिक आहार के गुर बताए। उन्होंने कहा कि भारतीयों के खानपान का जो तरीका है, उससे स्वस्थ और फिट रहना मुश्किल है। हमारे खाना पकाने की शैली को बदलने की जरूरत है। भोजन को ज्यादा पकाना या इसे डीप फ्राई करना अस्वास्थ्यकर है। उन्होंने इस बात जोर दिया कि कठोर व्यायाम की तुलना में सही तरीके से पकाया गया अच्छा भोजन वजन कम करने में अधिक प्रभावी साबित हो सकता है।

Hindustan, 11.03.2019, Pg. 17